

भारवियो - श्री सितम्बर १९८९

प्रिय भोमप्रकाश

(हा)
मुझे आपके दो पत्र मिले। इतना व्यस्त हूँ कि लिखने का समय ही न मिलता ~~मिलता~~ ^{मिला}। फिर भी कोपनहेगन का तैयारी है। इस वक्त से ६ अक्टूबर को यहां से पेरिस जायेंगे। प्रदर्शनी १० नवम्बर शुरू होगी। ~~अभी डर का काम करना है।~~

इस लिये जल्दी में वे दो शब्द। आपका रिफाई पेरिस में ही जाकर (उन सवेंगा)। फिर भी मरे स्टूडियो के स्कान में कभी आपका कैसेट जो Pierre ने पेरिस में लिख दिया था उसे ~~किसी~~ ^{किसी} ~~हफ~~ ^{हफ} से छुन ला रहा हूँ। कड़ी शान्ति मिलती है जैसे इ से धरती से ही निकले सब पवित्र करने की शक्ति और शान।

मुझे (कुशी है) कि आप भी जिनगी में ^{इस} ~~बड़ी~~ ^{बड़ी} ~~खस्रती~~ ^{खस्रती} से आये।

~~इस बीच में फिर से उस्ताद गियाउद्दौन शम्स का फि से (उन) का अक्स मिला, ६ भास में जो अच्छा रहा था से करीब ३० मील इ। अगर असरुद्वित इतनी न होती तो वही भोवियो भी जुलाना था...~~

तो फास्का और बेअरिस से अनाकाव होसकी

वस आज यही -। फिर लिखना।

वडा मोड के राव - (का)